Dr. Vandana Burman
Associate professor
Dept of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A - Part I    Paper - II
Metaphysics and Epistemology

Notes 1. "Empiricism"
(अनुभववाद)

GRB BOOKS

अनुभववाद वह दार्शनिक सिद्धान्त है, जिसके अनुसार - "ज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र साधन अनुभव है।" यह 'बुद्धिवाद' का विरोधी सिद्धान्त है। अतः ज्ञान उत्पन्न करने में बुद्धि को असमर्थ घोषित करता है। मनुष्य के ज्ञानकोष में जो भी ज्ञान है वह सभी अनुभवजन्य है, इसलिए ज्ञान का कोई भी अंश अनुभव से परे नहीं है। चूंकि ज्ञान-मात्र अनुभव से प्राप्त होता है इसलिए सभी ज्ञान अर्जित या सीखा हुआ है। कुछ भी जन्मजात या सहज नहीं है।

अनुभववाद का कहना है कि जन्म के समय मानव मस्तिष्क में किसी प्रकार का ज्ञान विद्यमान नहीं रहता है वह सफेद कागज या कोरी पट्टी के समान रहता है जिसपर अनुभव के पूर्व कुछ भी अंकित नहीं रहता। लॉक के अनुसार - "mind at birth is a clean slate or tabularasa and all knowledge are acquired through experience"

अनुभववाद का यह सिद्धान्त बुद्धिवाद के सहजज्ञानवाद (Theory of innate ideas) के विरुद्ध है। अंग्रेज दार्शनिक जानलॉक ने इस सिद्धान्त का खण्डन किया है, उनका कहना है कि जो ज्ञान सहज या जन्मजात होगा, उसकी चेतना अवश्य रहेगी और वह

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

सबको स्वीकृत होगा। ईश्वर आत्मा आत्मा की अमरता कार्यकारण नियम धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों आदि के प्रत्यय जन्मजात कहे जाते हैं। किन्तु इनकी चेतना सबको नहीं रहती। बच्चों आदिवासी असभ्यों पागलों आदि को इनकी चेतना नहीं रहती। यदि कोई यह कहे कि ये जन्मजात प्रत्यय तो अंकित रहते हैं पर उसका ज्ञान उन्हें नहीं होता, तो यह विरोधी बात होगी।

"It seems, to me near a countradictions to say, a notion is imprited on the mind and yet at the same time to say that the mind is ignorant of it."

अतः एक ओर यह कहना कि चेतन मन पर ये प्रत्यय अंकित हैं और दूसरी ओर यह कहना कि इनका ज्ञान नहीं रहता अर्थहीन एवं हास्यास्पद बात है। पुनः लॉक कहते हैं कि इन प्रत्ययों के विषय में सार्वलौकिकता और अनिवार्यता के गुण का भी अभाव है। ईश्वर का विचार सभी देशकाल में सामान्य रूप से मान्य नहीं है। कुछ नास्तिकों की बात की बात तो छोड़ ही दे ऐसी बहुत सारी जातियाँ हैं, जिनका ईश्वर सम्बन्धी प्रत्यय से कोई परिचय नहीं होता। इस प्रकार विभिन्न तर्कों द्वारा लॉक सिद्ध करते

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

है कि कोई भी ज्ञान सहज नहीं है। अनुभव ही ज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र साधन है।

1. अनुभववाद मानता है कि ज्ञान निर्णयों की संरचना है, निर्णय प्रत्ययों को सम्बन्धित करने से बनते हैं। अतः ज्ञान के आदि तत्व प्रत्यय हैं इन प्रत्ययों की उत्पत्ति अनुभव से होती है। यही कारण है कि अनुभव ही ज्ञान का सच्चा उत्पादक कहा जाता है मन या बुद्धि निष्क्रिय रूप में प्रत्ययों को मात्र ग्रहण करने वाले है, उत्पन्न करनेवाले नहीं।

2. अनुभववाद के अनुसार ज्ञान की पद्धति आगमनात्मक है वह ज्ञान का एकमात्र साधन अनुभव को मानता है और अनुभव चूंकि विशेषों का होता है और विशेष ज्ञान के आधार पर आगमन विधि द्वारा सामान्यों का ज्ञान होता है, इसलिए ज्ञान की पद्धति आगमनात्मक है।

3. ज्ञान के आदर्श के विषय में भी अनुभववाद बुद्धिवाद से सहमत नहीं है। बुद्धिवाद गणित, विज्ञान को दर्शन का आधार मानता है, किन्तु अनुभववाद इसका विरोध करता है, वह बतलाता है कि विज्ञान दो तरह के होते है—

Conceptual and objective.

धारणात्मक विज्ञान वस्तुओं के अस्तित्व के

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

विषय में कुछ नहीं बताता बल्कि कुछ धारणाओं से कुछ निष्कर्ष निकालता है। गणित विज्ञान धारणात्मक है त्रिभुज, वृत्त आदि की धारणाओं से वह निगमन निकालता है, यह नहीं बताता है कि वस्तुतः त्रिभुज या वृत्त का अस्तित्व संसार में है या नहीं। ऐसा ज्ञान दर्शन का आदर्श नहीं बन सकता, क्योंकि इसका अभिष्ट वास्तविक पदार्थों का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करता है। वास्तविक घटनाओं का ज्ञान बौद्धिक विश्लेषण से नहीं, बल्कि अनुभव से होता है। चूँकि दर्शन का सम्बन्ध वास्तविक जगत से है और अधिक से अधिक ज्ञान की उपलब्धि ही इसका आदर्श है।

अनुभववादियों की सर्वस्वीकृत मान्यता है कि ज्ञान का उद्गम अनुभव है। किन्तु अनुभव के स्वरूप के विषय में कभी-कभी इनमें मतभेद दीख पड़ता है। कुछ अनुभववादी मानते हैं कि वाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार के अनुभव ज्ञान के साधन हैं। कुछ ऐसे भी हैं, जो सिर्फ ऐन्द्रिय अनुभव अर्थात संवेदन को प्रमाण मानते हैं। इस मत को संवेदनवाद की संज्ञा दी जाती है।

सर्वप्रथम अनुभववाद का जन्म सोफिस्ट सम्प्रदाय में हुआ था। इसका समर्थन सबसे पहले Protogoras ने किया था। इनके अनुसार sensation ही ज्ञान का साधन है। संवेदन व्यक्तिगत होते हैं, सामान्य नहीं। इसलिए हमेशा विशिष्ट वस्तुओं का ही ज्ञान

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

~~में होता है।~~

Static school, कोली
अनुभववाद का समर्थन करता है।
इसके समर्थक Zeno के अनुसार सभी
ज्ञान अनुभव से प्राप्त होते हैं।
आगे चलकर अनुभववाद का पूर्ण
विकास सत्रहवीं और अठारहवीं
शताब्दियों में हुआ जिसका प्रवर्तन
लॉक ने किया। बर्कले और ह्यूम के
दर्शन में यह अधिक क्रमिक और
संगत हुआ। ह्यूम के दर्शन का
अन्त सन्देहवाद में होता है।

भारतीय दर्शन के
अन्तर्गत अनुभववाद का एकमात्र
कट्टर समर्थक चार्वाक दर्शन है।
चार्वाक के अनुसार सत्य और
निश्चित ज्ञान प्रत्यक्ष से ही होता
है। चूंकि सभी पदार्थों का प्रत्यक्ष
ही नहीं होता, इसलिए उन्हें सत्य
भी नहीं कहा जा सकता। इसलिए
चार्वाक, ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग आदि
को नहीं मानते हैं क्योंकि इनका
प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता है।
इनके अनुसार अनुभव ही ज्ञान का
एकमात्र साधन है।

अनुभववाद के विरुद्ध
अनेक आलोचनाएं भी की गयी हैं—

1. यह एकांगी
सिद्धान्त है, क्योंकि ये अनुभव
को ही एकमात्र ज्ञान का
साधन मानते हैं ये बुद्धि
का पूर्णतः बहिष्कार
करते हैं। लेकिन

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM
GRB BOOKS

Notes GRB BOOKS

हम जानते हैं कि अनुभव के अलावे बुद्धि से भी ज्ञान की प्राप्ति होती है, बुद्धि से प्राप्त ज्ञान की व्याख्या ये नहीं कर पाते हैं।

2. यह सिद्धान्त अनुभव को संकुचित अर्थों में देखता है। अनुभव से इनका विशेष तात्पर्य ऐन्द्रिय अनुभव से है। यह एक पक्षपात का है। लॉक से लेकर ह्यूम सभी अनुभववादी ऐन्द्रिय अनुभव को अधिक महत्त्व देते हैं। किन्तु यह पक्षपात उचित न्यायोचित नहीं है, क्योंकि हमारे अतीन्द्रिय अनुभव जैसे धार्मिक अनुभव का कम महत्त्व नहीं है।

3. अनुभववाद आत्मघातक सिद्धान्त है, क्योंकि यह मानता है कि अनुभव मात्र प्रमाण है। किन्तु अनुभववाद कोई ऐन्द्रिय पदार्थ नहीं है, जिसका ऐन्द्रिय अनुभव हो सके। वह तो मात्र एक सिद्धान्त है, जिसका बौद्धिक चिन्तन हो सकता है।

4. अनुभववाद मन को मूलतः निष्क्रिय मानता है, इसका यह विचार भी आधुनिक मनोविज्ञान को मान्य नहीं है। आधुनिक मनोविज्ञान मन को स्वभावतः सक्रिय मानता है और बतलाता है कि छोटी से छोटी क्रिया में भी वह सक्रिय रहता है। अनुभववाद कहता है कि संवेदन में मन निष्क्रिय रहता है। किन्तु आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसंधान ने यह सिद्ध किया है कि इसमें भी मन को सचेष्ट और क्रियाशील रहना पड़ता है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

5. अनुभववाद सिद्धान्त को मान भी लिया जाय तो वह निश्चित सिद्धान्त सिद्ध नहीं होता। यह केवल सम्भाव्य सिद्धान्त ही है क्योंकि अनुभव कुछ का ही होता है। कुछ अनुभव के आधार पर किसी सिद्धान्त को स्थापित नहीं किया जा सकता। अतः यह सिद्धान्त निश्चित नहीं है।

6. अनुभववाद जन्मजात प्रत्यय का खण्डन करता है, इसके अनुसार व्यक्ति के मन में कोई जन्मजात प्रत्यय नहीं होता लाक के अनुसार यदि जन्मजात प्रत्यय होता तो उसकी चेतना मन में अवश्य होती क्योंकि जन्मजात प्रत्यय जन्मकाल से ही सबों में समान रूप से विद्यमान रहते। बच्चों और पागलों में इस चेतना का अभाव जन्मजात प्रत्यय को असिद्ध करता है। लेकिन हम देखते हैं कि उनका यह तर्क गलत है। इससे जन्मजात प्रत्यय असिद्ध नहीं होता, जैसा कि लाइबनिज ने कहा है कि जन्मजात प्रत्यय मन में अव्यक्त रूप में रहते हैं जिन्हें काल क्रम में प्रयास करके स्पष्ट किया जा सकता है।

7. अनुभववाद की परिणति सर्वाहंवाद में हो जाती है जो कि दोषपूर्ण सिद्धान्त है। सर्वाहंवाद के अनुसार केवल प्रत्यय ही सत्य है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes GRB BOOKS

आत्मा, ईश्वर, जड़ सत्य नहीं है। प्रत्ययों का आश्रय न तो जड़ है न आत्मा है न ईश्वर, किन्तु यह विचार तर्क संगत नहीं है। यह समझ में नहीं आता कि बिना आश्रय के प्रत्यय का अस्तित्व कैसे रहेगा? क्योंकि अनुभव में हम किसी भी ऐसे प्रत्यय को नहीं जानते, जो अपना आश्रय स्वयं हो।

8. अनुभववाद की परिणति परमाणुवाद के सिद्धान्त में हो जाती है, जो कि दोषपूर्ण है। इस परमाणुवाद के अनुसार प्रत्यय परमाणुओं की तरह असम्बन्धित होते हैं। बाद में उनमें सम्बन्ध होता है। किन्तु ह्यूम के अनुसार जब आत्मा है ही नहीं तो प्रश्न उठता है कि उनके बीच कौन सा सम्बन्ध स्थापित करता है। ह्यूम कहते हैं कि कुछ नियम हैं जिनसे वे सम्बन्ध होते हैं, लेकिन नियमों के आधार पर यह कैसे सम्बन्धित हो जायेगा।

(9) यह परमाणुवाद आधुनिक मनोविज्ञान का भी विरोधी सिद्धान्त है। आधुनिक मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि संवेदन से प्राप्त प्रत्यय अलग-अलग नहीं होते हैं। यह एक दूसरे से जुड़े रहते हैं।

(10) अनुभववाद का चरम विकास ह्यूम के दर्शन में होता है और इसकी ~~परिणति~~ परिणति

गम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

संदेहवाद में होती है, जो कि दोषपूर्ण है। संदेहवाद व्यवहारिक और सैद्धान्तिक दोनों दृष्टियों से अग्राह्य है। व्यवहार के लिए विश्वास आवश्यक है किन्तु सन्देहवाद विश्वास को नष्ट करता है। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से संदेहवाद आत्मघातक है। ह्यूम मानते हैं कि वस्तु जगत के सम्बन्ध में सार्वभौमिक ज्ञान सम्भव नहीं है। इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि इनके संदेहवाद की सत्यता भी सार्वभौम नहीं है क्योंकि वह भी वस्तु जगत के विषय में एक प्रकार का ज्ञान है।

उपर्युक्त मूल्यांकनों के आधार पर हम कह सकते हैं कि अनुभववाद एक सफल सिद्धान्त नहीं है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM